फिलेमोन
परिचय

प्रेरित पौलुस के लेखों के अन्त में नये नियम में लगभग छुपा हुआ फिलेमोन के नाम पौलुस का छोटा सा पत्र है। केवल पच्चीस छोटी-छोटी आयतों वाली फिलेमोन की पुस्तक को आसानी से नज़रअन्दाज़ किया जाता है और आम तौर पर उसकी अनदेखी की जाती है। इस संक्षिप्त पत्री में डॉक्ट्रिन की कोई बड़ी चर्चा नहीं है और याद करने के लिए एक भी विशेष आयत नहीं है। शायद फिलेमोन के बारे में सबसे अधिक पूछा जाने वाला प्रश्न यह है कि ''इसे बाइबल में रखा ही क्यों गया है?'' तौभी यह आज भी पवित्र शास्त्र का महत्वपूर्ण भाग बनी हुई है, क्योंकि यह मसीही विश्वास को बेहतरीन ढंग से पेश करती और इसमें उस नाटकीय प्रभाव को जो मसीही विश्वास का यीशु के अनुयायियों पर एक-दूसरे पर होना चाहिए।

इस प्रश्न में कई पत्र अनुत्तरित रहते हैं। फिलेमोन, अपफिया और अरखिप्पुस के बीच क्या सम्बन्ध था? उनेसिमुस दास कैसे बना? क्या उनेसिमुस वापस न आने के इरादे से भागा था या उसने केवल पौलुस की सहायता चाही थी? उसको पौलुस कैसे मिला? फिलेमोन और उनेसिमुस के बीच क्या नीजि सम्बन्ध था? संक्षेप में बहुत कुछ ऐसा है जो हम इस पत्र की पृष्ठभूमि के बारे में नहीं जानते हैं।

परन्तु इस पहेलीनुमा कहानी की आवश्यकता बातें स्पष्ट हैं। फिलेमोन दास का स्वामी था जिसे पौलुस के प्रचार से मसीह में लाया गया था। उनेसिमुस, फिलेमोन का दास था जो रोम में भाग गया था जहां उसे पौलुस मिला और वहां उसका मन परिवर्तन हुआ था। पौलुस जो उसे समय जेल में था ने उनेसिमुस को अपने स्वामी के साथ मेल करने के लिए फिलेमोन के पास वापस भेज दिया। वापसी में उनेसिमुस पौलुस के हाथ का लिखा हुआ पत्र फिलेमोन को देने के लिए ले गया ताकि वह उनेसिमुस के साथ प्रभु में एक भाई के जैसा व्यवहार करे।

प्रेरित, दास का स्वामी, और दास एक नई और कठिन परिस्थिति में थे। उनका यीशु के साथ और इस कारण एक दूसरे के साथ सम्बन्ध होने के लिए उन सब के लिए इस नाजुक मामले को एक-दूसरे के साथ बड़ी दीनता और बड़े सम्मान के साथ देखना आवश्यक था। प्रेरित पौलुस के सामने ऐसी ही चुनौती आई जब उसने फिलेमोन के नाम अपने पत्र को लिखा। हम आभारी हो सकते हैं कि आज संसार के अधिकतर भागों में दासता खत्म हो चुकी है परन्तु सच्चे भाइयों और बहनों के रूप में साथी मसीही लोगों के साथ बर्ताव करने का संघर्ष आज भी मसीह के अनुयायियों के रूप में चुनौती बना हुआ है। जब तक यह बात सही रहेगी तब तक फिलेमोन के नाम पौलुस के पत्र की पच्चीस आयतें कलीसिया के बहुत महत्वपूर्ण उद्देश्य को पूरा करती रहेंगी।

लेखक

इस पत्र के पहले शब्द में लेखक अपना परिचय ''पौलुस'' के रूप में देता है। उसके इसे लिखने के समय वह ''मसीह यीशु का कैदी'' (आयत 1) होने के साथ-साथ ''बूढ़ा पौलुस''

भी था (आयत 9)। पत्र का हर संकेत इस निष्कर्ष की ओर ध्यान दिलाता है कि पत्र प्रेरित पौलुस द्वारा अपने जीवन के अन्तिम वर्षों के दौरान जेल में रहते समय लिखा गया था। चाहे (फरडिलेंड माउल और उन्नीसवीं शताब्दी की क्यूबिनज़ेन पाठशाला) ने इस विचार को चुनौती दी है, ''फिलेमोन के पत्र की प्रामाणिकता आज लगभग विश्वव्यापी रूप में मानी जाती है, क्योंकि इस पर संदेह करने का कोई गम्भीर कारण नहीं है।''[1]

सह-प्रेषक ''भाई तीमुथियुस'' (आयत 1) का भी नाम है। तीमुथियुस पौलुस का जवान सहायक था। जो आम तौर पर पौलुस के दूत के रूप में काम करते हुए उसके साथ घूमता था। उसका नाम पौलुस के छह पत्रों में सहप्रेषक के रूप में बताया गया है (2 कुरिन्थियों, फिलिप्पियों, कुलुस्सियों, 1 थिस्सलुनीकियों, 2 थिस्सलुनीकियों, और फिलेमोन)। तीमुथियुस के वर्णन के लिए सम्भवतया ''सह-प्रेषक'' शब्द शायद ''सह-लेखक'' से अधिक सही है, क्योंकि पत्र के पीछे का अधिकार पौलुस का ही है। आयत 4 से आरम्भ करते हुए पौलुस ने बहुवचन सर्वनामों (''हम'') और (''हमारे'') के बजाय प्रथमपुरुष एकवचन सर्वनामों (''मैं'' और ''मुझे'') का इस्तेमाल किया। सम्बोधन में चाहे पौलुस के साथ तीमुथियुस का नाम दिया गया परन्तु इस पत्र के पढ़ा जाने के समय फिलेमोन को पौलुस का ''स्वर'' ही सुनाई दिया।

प्राप्तकर्ता

पत्र हमारे ''फिलेमोन और बहिन अपफिया, और हमारे साथी योद्धा अरखिप्पुस, और फिलेमोन के घर की कलीसिया के नाम'' (आयतें 1, 2) था। इस सम्बोधन की हर बात में विशेष ध्यान मिलता है।

फिलेमोन। फिलेमोन जिसका पता हमें उसके नाम वाले नये नियम के पत्र के द्वारा पता चलता है, जो दास का स्वामी था जो पौलुस की सेवकाई के द्वारा मसीही बन गया था। नि:संदेह वह कुलुस्से की कलीसिया का सदस्य था और धनवान पुरुष था (दास का स्वामी जो अपने घर में कलीसिया को बुलाता था)। पौलुस ने कोमल शब्दों में उसका विवरण ''प्रिय भाई'' (आयत 1), ''भाई'' (आयतें 7, 20), और ''सहभागी'' (आयत 17) के रूप में किया है। यह पक्का नहीं है कि पौलुस ने उसे सीधे जेल में दिखाया था या किसी के द्वारा, शायद इपफ्रास के काम के द्वारा (कुलुस्सियों 1:7)। जैसा भी हो पौलुस ने दृढ़तापूर्वक फिलेमोन को स्मरण करवाया, ''... मेरा कर्म जो तुझ पर है वह तू ही है'' (आयत 19)। समय के साथ फिलेमोन परमेश्वर के राज्य में पौलुस का ''सहकर्मी'' बन गया था (आयत 1)। यह अभिव्यक्ति आयत 24 में फिर मिलती है जहां इपफ्रास, मरकुस, अरिस्तर्खुस, देमास और लूका का वर्णन है। शब्द का उपयोग संकेत देता है कि पौलुस फिलेमोन को परमेश्वर के मिशन में सहकर्मी मानता था। इसका अर्थ चाहे यह हो कि ''साथ-साथ काम करते थे'' या एक ही उद्देश्य के लिए अलग अलग स्थानों में काम कर रहे थे, हम पक्का नहीं बता सकते।

अपफिया। पौलुस ने इस मसीही स्त्री का विवरण केवल हमारी ''बहन'' के रूप में दिया (आयत 2)। सम्भवतया वह फिलेमोन की पत्नी या बहन थी। जो भी हो वह फिलेमोन के घरानें की प्रभावशाली महिला सदस्य थी।

अरखिप्पुस। इस व्यक्ति को ''हमारे [पौलुस और तीमुथियुस] के साथी योद्धा'' (आयत

2)के रूप में दिखाया गया है, जो ऐसी अभिव्यक्ति है जिसे पौलस ने फिलिप्पियों 2:25 में इपफ्रोदितुस के लिए इस्तेमाल किया। कुलुस्सियों 4:17 में पौलुस ने अरखिप्पुस के लिए रहस्यमय निर्देश लिखा: ''जो सेवा प्रभु में तुझे सौंपी गई है, उसे सावधानी के साथ पूरी करना।'' सम्भवतया वह फिलेमोन और अपफिया का भाई और उनका पुत्र था।

घर की कलीसिया। आज कलीसियाएं आम तौर पर उस विशेष उद्देश्य के लिए समर्पित भवनों में इकट्ठी होती हैं। परन्तु पहली सदी में कलीसियाएं आम तौर पर घरों में इकट्ठा होती थीं (प्रेरितों 2:46; 5:42)। ऐसा होने पर जिन मसीही लोगों के घर इतने बड़े होते थे कि वे मण्डली को वहां बिठा सकें वे कलीसिया के मेज़बान का काम करते थे। प्रिसका और अकविल्ला (रोमियों 16:3–5; 1 कुरिन्थियों 16:19) और नुमफा (कुलुस्सियों 4:15) इसका उदाहरण थे। फिलेमोन के पत्र में पौलुस का सम्बोधन उसके लेखों में केवल एक घटना है जहां उसने पत्र के अभिवादन में घर की कलीसिया का नाम लिया।

आयत 2 में ''के'' एक वचन में और सम्भवतया यह फिलेमोन की बात है (दिया गया पहला व्यक्ति और इस पत्र का मुख्य फोकस)। परन्तु भाषा इस सम्भावना को खुला रहने देती है कि अरखिप्पुस (सर्वनाम से पहले दिया गया अन्तिम नाम) हो सकता है। इससे भी महत्वपूर्ण प्रश्न यह है कि सम्बोधन के इस भाग को कैसे लेना चाहा होगा। फिलेमोन के पत्र को आम तौर पर व्यक्तिगत पत्र माना जाता है।

एफ़. एफ़. ब्रूस के विचार ने पूरी कलीसिया के सामने ऐसे व्यक्तिगत प्रश्न को रखना, चालाकी से और दबाव से काम करना होगा। ब्रूस ने दृढ़ता से कहा, ''पत्र निजी है जो केवल फिलेमोन के लिए लिखा गया था''[2] परन्तु अन्य लोग जो कुछ प्रेरित पौलुस के मन में था उसे कलीसिया का सकारात्मक दबाव मानते हैं।[3] चर्चा में न केवल फिलेमोन के घर के अन्य सदस्यों (अपफिया और अरखिप्पुस) को लाया गया बल्कि पूरी कलीसिया को जो फिलेमोन के घर में इकट्ठा होती थी भी बुलाया गया। मिलकर उन्होंने कठिन मुद्दे पर अपने साझा विचार के प्रभावों पर विचार करना था कि मसीही दासों और मसीही स्वामियों को मसीह के नाम में एक-दूसरे के साथ कैसा बर्ताव करना चाहिए।

पूरी कलीसिया की भागीदारी जो पहले एक निजी मामला लगती है फिलेमोन के पत्र का सबसे शानदार पहलू हो सकती है। मसीही विश्वास व्यक्तिगत है परन्तु यह निजी नहीं है। फिलेमोन को इसका पता पौलुस को उसे लिखे पत्र को कुलुस्सियों की कलीसिया में पढ़े जाने पर चला होगा! इसका अर्थ यह है कि फिलेमोन के नाम पत्र बहुत ही सार्वजनकि निजी पत्र है।

फिलेमोन और कुलुस्से

फिलेमोन और कुलुस्से की कलीसिया के नाम पौलुस के पत्र पर एक ही नगर के लोगों के लिए एक ही समय में लिखे गए और एक ही वाहक द्वारा पहुंचाए गए लगते हैं। दोनों पत्रों में कई नाम मेल खाते हैं:

व्यक्ति	कुलुस्सियों	फिलेमोन
इपफ्रास	1:7; 4:12	आयत 23
उनेसिमुस	4:9	आयत 10
अरिस्तर्खुस	4:10	आयत 24
मरकुस	4:10	आयत 24
लूका	4:14	आयत 24
देमास	4:14	आयत 24

दोनों पत्रों में पाया जाने वाला सबसे मज़बूत स्तब्ध कुलुस्सियों 4:7–9 में मिलता है:

> प्रिय भाई और विश्वासयोग्य सेवक, तुखिकुस जो प्रभु में मेरा सहकर्मी है, मेरी सब बातें तुम्हें बता देगा। उसे मैं ने सइलिए तुम्हारे पास भी भेजा है, कि तुम्हें हमारी दशा मालूम हो जाए और वह तुम्हारे हृदयों को शान्ति दे। और उसके साथ *उनेसिमुस* को भी भेजा है जो विश्वासयोग्य और प्रिय भाई और *तुम ही में से है,* ये तुम्हें यहां की सारी बातें बता देंगे।

इकट्ठे लेने पर प्रमाण से यह संकेत मिलता हुआ लगता है कि तुखिकुस और उनेसिमुस को पौलुस द्वारा दो पत्र देकर कुलुस्से में भेजा गया था जिसमें एक पूरी कलीसिया के नाम था और दूसरा कुलुस्से की कलीसिया के सदस्य फिलेमोन के नाम विशेषकर था।

लिखे जाने का समय व स्थान

फिलेमोन के नाम पत्र और इफिसियों, फिलिप्पियों और कुलुस्सियों के पत्रों को लम्बे समय से ''जेल की पत्रियां'' नाम दिया जाता रहा है। ये बात सच्च है कि विशाल भीतरी प्रमाण के कारण फिलेमोन के पौलुस के जेल में रहने के समय लिखे जाने पर कोई संदेह नहीं है (आयतें 1, 9, 10, 13, 23)। परम्परागत विचार यही है कि जेल की चारों पत्रियां पौलुस द्वारा कारावास के दौरान लिखी गई जिसका विवरण प्रेरितों 28:30, 31 में मिलता है। यदि सचमुच में ऐसा है तो फिलेमोन के नाम पत्र 60 से 62 ईस्वी के लगभग लिखा गया जब पौलुस कैसर के सामने अपील करने की राह देखते हुए रोम में नज़रबन्द था।

रोम से कुलुस्से की दूरी एक सौ से अधिक मील है जिस कारण व्याख्याकर्त्ताओं को इसमें संदेह है कि उनेसिमुस इतना लम्बा सफ़र कैसे चला होगा। रोम के स्थान पर उनका सुझाव कैसरिया या इफिसुस है। कैसरिया में पौलुस के कारावास का उल्लेख प्रेरितों 23:31—27:1 में है जो 57 से 59 ईस्वी के लगभग हुआ। नये नियम में इफिसुस के कारावास का विशेष उल्लेख नहीं है परन्तु यह लगभग 52 से 54 ईस्वी में हुआ हो सकता है। (देखें पृष्ठ 8, 9 पर।)

उनेसिमुस के लिए इफिसुस में जाने के लिए एक सप्ताह से कम का सफर होगा जबकि कैसरिया में जाने से थोड़ा अधिक समय लगता होगा। बेशक रोम को जाने के लिए कहीं अधिक समय और कहीं अधिक धन लगता होगा। अपने आकार के कारण रोम ने पौलुस के वहां पहुंचने पर पौलुस को ढूंढ़ने में भी उनेसिमुस के लिए बड़ी चुनौती होना था। परन्तु रोम नगर का आकार और लम्बी यात्रा उनेसिमुस के वहां जाने के कारण हो सकते हैं। रोम कुलुस्से से काफ़ी दूरी

पर था और वहां गायब होना आसान था जिससे उदण्डता से तलाश करने वाले भगौड़े दास के लिए अच्छा था।

हमारा प्रमाण चाहे इफिसुस या कैसरिया के लिए दिया जा सकता है जहां पौलुस ने फिलेमोन के नाम अपना यह पत्र लिखा, परन्तु यह टीका इस दृष्टिकोण से लिखा गया है कि यह पत्र 60 ईस्वी के आरम्भ के वर्षों में रोम से भेजा गया था। फिलेमोन के नाम पत्र की व्याख्या इसके लिखे जाने की स्थिति या लिखने के समय पौलुस के कारावास के स्थान पर निर्भर नही है। उनेसिमुस को पौलुस रोम, कैसरिया या इफिसुस में मिला हो इसका उस जबर्दस्त संदेश पर प्रभाव नहीं पड़ता जो उनेसिमुस ने पहली शताब्दी के मध्य में कही कुलुस्से में लौठने पर अपने स्वामी को सौंपा।

पहली शताब्दी ईस्वी में दासता

पहली शताब्दी का रोमी सम्राज्य दासता वाली संस्कृति वाला था। उस समय के बड़े नगरों में कुल जनसंख्या से एक तीहाई से अधिक भाग दासों का था। कोई कई प्रकार से दास बनता था: (1) युद्ध में पराजय, (2) डाकाजनी के द्वारा, (3) कर्ज की अदायगी के लिए अपने आपको बेचना, (4) कर्ज़ के लिए अदालत द्वारा दण्ड, (5) अवांछित बालक जिसे मरने के लिए छोड़ दिया गया हो, या (6) दास माता से जन्मा बच्चा।[4] पहली सदी के अधिकतर दास दास्तव में ही जन्म लेते थे। कइयों के पिता दासों के स्वामी होते थे और उनकी माता दासी।

दास के लिए जीवन की गुणवत्ता दास के स्वामी द्वारा किए गए व्यवहार पर निर्भर करती थी। रोमी कानून में दासों को मानवीय जीवों के रूप में माना जाता है परन्तु ''कानूनी व्यक्तियों'' के रूप में नहीं। कानूनी तौर पर दासों के विवाह, परिवार या मीरास नहीं होती थी। वे अपने आपको अदालत में पेश नहीं कर सकते थे और आपराधिक गतिविधियों के लिए अपने स्वामियों से उन्हें कठोर दण्ड दिया जाता था।[5]

कुछ परिस्थितियों में दासता खतरनाक स्थिति हो सकती थी परन्तु बहुत से दासों के साथ अच्छा बर्ताव किया जाता था और कइयों को तीस की उम्र तक स्वतन्त्रता पाने का अवसर मिल जाता था। पहली सदी के रोमी सम्राज्य में दासता को बुरी तरह से अपमानजनम नहीं माना जाता था। इसे केवल संस्कृति और प्रबन्ध के एक आवश्यक भाग के रूप में देखा जाता था। आम तौर पर बाज़ार में दासों और स्वतन्त्र लोगों के बीच अन्तर करना कठिन होता था क्योंकि आम तौर पर दोनों ही समूह एक ही काम करते थे। विष्ठि रूप में दास अपने स्वामियों से शारीरिक या बौद्धिक रूप में कम नहीं होते थे। कई बहुत पढ़े लिखे होते थे और अधिकतर शिक्षकों के रूप में काम करते थे। कई मामलों में दास स्वयं दासों के स्वामी होते थे।

नया नियम संकेत देता है कि आरम्भिक कलीसिया में दास और दासें के स्वामी दोनों होते थे (इफिसियों 6:5-9; कुलुस्सियुों 3:22—4:1)। दासों को ईमानदार और कठिन परिश्रम करने वाले होने को कहा जाता था जबकि उसके स्वामियों को न्यायप्रिय और निष्पक्ष होना सिखाया जाता था। दासों और उनके स्वामियों को प्रभु को सब लोगों के स्वामी के रूप में मानना आवश्यक था (कुलुस्सियों 4:1)। नये नियम में दासता को सीधे गलत नहीं कहा जाता था परन्तु मसीह के सुसमाचार में ऐसे परिवर्तन ला दिए जो जिन से अन्त में दास प्रथा संसार के कई भागों में हो गई।

माइकल आर. वीड का अवलोकन है, ''स्वतन्त्रता और समानता के सुसमाचार का प्रचार करते हुए आरम्भिक कलीसिया दासता और अन्याय से भरे संसार के साथ केवल अस्थाई भेद कर सकते थे।''[6] दासता की प्रथा और मसीही भाइचारे के लिए बुलाहट के बीच यह तनाव फिलेमोन के नाम पौलुस के पत्र की तवरित पृष्ठभूमि का काम करता है।

एक संक्षिप्त रूपरेखा

I. सलाम (आयतें 1–3)
II. धन्यवाद और प्रार्थना (आयतें 4–7)
III. उनेसिमुस के लिए पौलुस की अपील (आयतें 8–20)
IV. समापन (आयतें 21–25)

टिप्पणियां

[1]जोसफ ए. फिज़मायर, द *लैटर टु फिलेमोन,* द एंकर बाइबल, अंक 34सी (न्यू यॉर्क: डबलडे, 2000), 8. [2]एफ़. एफ़. बूस, द *एपिस्टल्स टु द कोलोसियंस, टु फिलेमोन, एण्ड टु द इफिसियंस,* द न्यू इंटरनेशनल कमैंटरी आन द न्यू टैस्टामैंट (ग्रैंड रैपिड्स, मिशिगन: विलियम बी. ईर्डमैंस पब्लिशिंग कं., 1984), 206. [3]जिनका यह मानना है कि यह पत्र पूरी मण्डली के लिए था उनमें थे *हार्पकोलिन्स बाइबल कमैंटरी, समप. जेमस लूथर मेयस* (सैन फ्रांसिस्को, कैलिफोर्निया: हार्पर सैन फ्रांसिस्को, 2000)1146–48 में फ़िजमायर मरकुस बर्थ और हेल्मट बलेंक, द *लैटर टु फिलेमोन: ए न्यू टैस्टामेंट विद नोट्स एण्ड कमैंटरी,* द ईर्डमैंस क्रिटिकल कमैंटरी (ग्रैंड रैपिड्स, मिशिगन: विलियम बी. ईर्डमैंस पब्लिशिंग कं., 2000); जेम्स डी. जी. डन्न, *एपिस्टल्स टु द कोलोसियंस एण्ड ट फिलेमोन: ए कमैंटरी आ द ग्रीक टैक्सट,* द न्यू इटरनैशनल ग्रीक टैस्टामैंट कमैंटरी (ग्रैंड रैपिड्स, मिशिगन: विलियम बी. ईर्डमैंस पब्लिशिंग कं., 1996); और नॉरमन आर. पीटरसन, ''फिलेमोन।'' [4]बार्थ एण्ड बलेंक, 5–8. [5]द *इंटनेशनल स्टैंडर्ड इबल इनसाक्लोपीडिया,* संशो. संस्क. सम्पा. ज्योफरी डब्ल्यू. ब्रोमिले (ग्रैंड रैपिड्स, मिशिगन: विलियम बी. ईर्डमैंस पब्लिशिंग कं., 1988), 4:544 में एस. एस. बार्ची, ''सलेवरी।'' [6]माइकल आर. वीड, द *लैटर्स आफ पॉल ट द इफिसियंस, द कोलोसियंस, एण्ड फिलेमोन, द लिव्रिग वर्ड कमैंटरी,* अंक 11 (अबिलेन टैक्सस: एसीयू प्रैस, 1971), 12.